आन्दोलन

मैथिली कविता संग्रह



बृषेशचन्द्र लाल

मैथिली कविता संग्रह

आन्दोलन

बृषेशचन्द्र लाल

प्रकाशक

सुदामा प्रकाशन

जनकपुरधाम

आन्दोलन

मैथिली कविता संग्रह

प्रकाशकः सुदामा प्रकाशन, जनकपुरधाम।

मूल्यः ने.रु. १५ टाका

भा.रु. १० टाका

समर्पण

प्रेरणाक स्रोत प्रातःस्मरणीय सम्पूर्ण

ओ शहीद तथा महान आत्मासभमे

जे लोकहितलेल बलिदानक पीड़ा

धारण करएमे समर्थ भेलाह।



आन्दोलनक आगिसँ बहराएल ई काव्य-कंचन ...

फूलक प्रत्येक पंखुरी कहि दैछ जे ओकर लता केहन माटिमे जनमल, ओकरा कतेक आ' केहन हवा, जल, प्रकाश भेटलैक। कवितो फूल थिक जकर ठोरसँ ओकर सम्पूर्ण परिवेश आ' स्रष्टाद्वारा भोगल हास्य-रोदन, संतोष-विक्षोभ, शान्ति आ' रोष आदि अनुभूति प्रकट होइत छैक। तैँ कविता किंवा साहित्यकेँ मूक इतिहासक मुखर सहोदर कहल गेल अछि। एहि कविता संग्रहक प्रत्येक कविता नेपालक वर्तमान इतिहासक ओजस्वी दस्तावेज अछि। नेपाल एखन एक बेर फेर संक्रान्ति पीड़ासँ गुजरि रहल अछि आ' एक गोट अभिनव पृष्ठ एकर इतिहासमे लिखा रहल छैक। संसदक बिघटन भए गेलैक अछि। प्रतिगमनवादी शक्ति फोँफिया रहल अछि – जेना मरल गहुमनमे फेर जान आबि गेल होइक आ' फैँच काढ़ि नेने हुअए। संसदवादी शक्तिसभ भाला-गराँस लए दौड़ल अछि , गत्र-गत्रमे बेधैत छैक मुदा ओ डसबाक लेल बेर-बेर लपकैत छैक। कवि बृषेश चन्द्र लालक शब्दमे –

बी.पी. तोहर गाममे

भूतक प्रवेश भ' गेल छह

जे उनटे चलैत अछि !

ओकर पयर कहाँदोन पाछाँ घुमल छैक

दाँतसभपर खून एखनो जमल छैक ...

कवि बृषेश चन्द्र लालक व्यक्तितत्व वाल्यकालहिंसँ अत्यन्त भावुक, संवेदनशील, चिन्तनशील, कालद्रष्टा आ' प्रखर राजनैतिक चेतनासँ उद्भासित रहलैन्ह

अछि। मुदा, जीवनक सम्पूर्ण उर्जा देशमे प्रजातन्त्रक स्थापना आ' स्थायित्वहेतु लगा देबाक कारणेँ साहित्यक कटोरीमे हुनक प्रतिभाक दान नगण्ये रुपमे प्राप्त भए सकल। एहि कविता संग्रहक कवितासभमे जे भावनाक ज्वार छैक, चरम ओजस्विता छैक, आलंकारिता, विम्वात्मकता, प्रतीकात्मकता, नग्न यर्थाथक चित्रण, आह्वान, आक्रोश आ' अद्भूत शिल्प-विच्छिति छैक से हुनकामे नुकाएल काव्य-प्रतिभाक प्रर्याप्त प्रमाण थिक। नेपालीय मैथिली साहित्यमे पहिल बेर एहन कोनो कविता संग्रह आएल जाहिमे प्रत्येक कविता समसामयिक राजनीतिसँ प्रेरित अछि। हम कवि बृषेशक हार्दिक अभिनन्दन करैत हुनक आओरो-आओरो कविता संग्रहकेँ प्रकाशित देखबाक विनम्र आकांक्षा प्रकट कएने बिनु नहि रहि सकैत छी।

देवीथान, जनकपुरधाम — डॉ. राजेन्द्र प्रसाद 'विमल'

आबह न !

बी.पी. तोहर गाममे
भूतक प्रवेश भ’ गेल छह
जे उनटे चलैत अछि !

***

ओकर पएर कहाँदोन पाछाँ घुमल छैक
दाँतसभपर खून एखनो जमल छैक
आ मुहोक छाँह पानिमे मरलहेसन अबैत छैक
आँखि आ’ कान पीठदिशि भेलासँ
ओ पछे देखैत अछि, पछे सोचैत अछि !!

***

भूतसभकेँ जमा क’ नेने छह
भूतेक मण्डलीसभसँ हरहोड़ मचोने छह
केओ एम्हरसँ केओ ओम्हरसँ
लोकक परान छिनैत अछि !!!

***

भूतकेँ त भगते भगाओत ने
तकरे खोजए कहाँदोन बड़का गाम जएतैक
कहुँ ओकरो मिला लेलकैक त’ की करतैक ?
हौ, तोँही आबह ने
बड़ भर रहैत अछि !!!!

कत्त   छी, आउने !

हेऔ ! कत्त छी ? आउने !
एहि विकट अन्हारमे
कनेक्के बाट देखाउने !
गल्ली-गल्लीमे हतियार नेने
टिकबासभ अछि घुमिरहल
रक्षाक नामपर ठगबासभ
सर्वस्व अछि लुटिरहल
कहुनाकए भगाउ ने !
हेऔ, कत्त छी ? आउ ने
कनेक्के बाट देखाउने !!

शान्ति चाही मुदा फर्माबमोजिम

हे हौ, शान्ति बनाबएबलासभ
फर्माबमोजिम शान्ति बनाबह
ई गोर्खालीसभक देश थीक !

बिनु झगड़ा , रगड़ा आ' शोक
बिना हतियार, खुखुरी आ' नोंक
एहिठामक जीवनमे जीवन्तता नहि
एतय शान्तिमे हिंसा समटाएक चाही
प्रत्येक खुशी आ' पर्वसँ पहिने
बहुतोकेँ छटपटाएक चाही
तैँ हौ, शान्तिक व्यापारीसभ !
फर्माबमोजिमक शान्ति पठावह,
शान्तिक हरेक प्रकरणमे
मारकाटक सम्भावना अँटाबह !
ई गोर्खालीसभक देश थीक !!

दुर्रर बकलेल !

दुर्रर बकलेल !
चाही तऽ
मुदा हमरालेल !!

१

शान्ति चाही क्रान्ति चाही
शासन आ' अनुशासन चाही
नियम चाही विनियम चाही
प्रगति चाही उन्नति चाही
सभतरिसँ समर्थन चाही
पक्षेमे घमर्थन चाही
श्रम चाही, संघर्ष चाही
त्याग आ' उत्सर्ग चाही
सभसँ नीक अर्घ चाही
पृथ्वीयोपर स्वर्ग चाही
की नै चाही ? सभ किछु चाही
तैं कि तोरा लेल ?
दुर्रर बकलेल !
चाही तऽऽऽऽऽ
मुदा हमरालेल !!

२

हम बजैत छी शान्त रह
खेल खेलैत छी शान्त रह

खूब पेलैत छी शान्त रह
बाँहि मलैत छी शान्त रह
हम खाइत छी शान्त रह
लऽ जाइत छी शान्त रह
भूखल सुतैत छैँ शान्त रह
काहि कटैत छैँ शान्त रह
सोझे मरैत छैँ शान्त रह
यएह तँ असली शान्ति भेल
दुर्रर धहलेल !
चाही तऽऽऽ
मुदा हमरालेल !!

३

हम सोची से जनता बाजओ
राष्ट्रीयता हमरा पाछाँ आबओ
राज्य छी हमहीं हमरे कहाबओ
सभ रैती अछि एम्हरे लाबओ
सुखहेतु हमरे सभ सजाबओ
झुकि-झुकि सदिखन शीश नबाबओ
होइत रहए यएहटा खेल
दुर्रर बकलेल !
चाही तऽऽऽ
मुदा हमरालेल !!

४

के छह हिन्दू चौर डोलाबह
जौं छह बौद्ध तँ सम्यक कराबह

छी हम खाँहे जलसा सजाबह
जौं मगुराली त पैग बढ़ाबह
नहि छी फेर हम ककरोलेल
दुर्रर बकलेल !
सभ किछु अछि
हमरालेल, हमरालेल !!!

ई आन्दोलन देखा देत

ई आन्दोलन देखा देत
सभक चित बुझा' देत
हमहीं छी दुनियाँ सोचएबलाकेँ
रसातलमे धसा देत
ई आन्दोलन देखा देत !

डर आतंकक बलपर
राजक लालसामे जीबएबलासभक
अस्तित्वकेँ ई आन्दोलन बिला देत
ओकरेसँ खोधल खोंझक खाधिमे
भसियाकए खसा देत
काल तँ अगँ ने बढ़तैक यौ
तैं पछमुड़ियाकेँ ई सोझे मेटा देत
ई आन्दोलन देखा देत !

पछमुड़ियाक पराजयक बाद
मौज करक कल्पनामे
पहिलुका जमा कएल कोशलिया
मृगतृष्णाक लहरिमे बहा देत
सभक ई रातुक निन्न उड़ा देत
ई आन्दोलन देखा देत !

चलू आन्दोलनमे !

चलू आन्दोलनमे
जिन्दाबाद मुर्दाबाद करए
चलू आन्दोलनमे !

१.

बाँछितकेँ मँगाबएलेल
अबांछित भगाबएलेल
पिड़ितकेँ जगाबएलेल
पीड़क हड़काबएलेल
चलू आन्दोलनमे
जिन्दाबाद मुर्दाबाद करए
चलू आन्दोलनमे !

२.

त्याग करु बलिदान करु
ई आहाँक धर्म थिक
मानवक जीवनकेर
यएह तँ लक्ष्य आ मर्म थिक
मरब त शहीद हएब
स्वर्गकेर राज पएब
मान ओ सम्मानसहित
सभतरि धन्य कहएब
चलू आन्दोलनमे
जिन्दाबाद मुर्दाबाद करए
चलू आन्दोलनमे !

३.

हएत की

अबांछित भागि जाएत

ओकरहिंसँ जनमि फेर

अबाँछिते आबि जाएत

मुर्दाबाद तँ काज क’ जाएत

जिन्दाबाद मुदा लजा जाएत

धोबियाक भीजल लत्ता छाड़ि

जाँता सिलौट लदा जाएत

चलू आन्दोलनमे

जिन्दाबाद मुर्दाबाद करए

चलू आन्दोलनमे !

४.

जातिक टोप छन्हि

कँखचप्पीक ठोप छन्हि

भक्त अपराधीसभक

समर्थनकेर तोप छन्हि

रक्तबीजक जीन आ’

लाज भेल लोप छन्हि

चलू आन्दोलनमे

जिन्दाबाद मुर्दाबाद करए

चलू आन्दोलनमे !

५.

आहाँक त्याग अछि

हिनकर लगानी छन्हि

आहाँ बलिदानी छी

हिनकर फुटानी छन्हि

आहाँक भिक्षाटन अछि

तऽ एतए कारदानी छन्हि

मारि आहाँ खएने हएब

मुदा हिनकामे मर्दानी छन्हि

चलू आन्दोलनमे

जिन्दाबाद मुर्दाबाद करए

चलू आन्दोलनमे !

६.

आन्दोलन बिनु आहाँ जी नहि सकब

हिनकर जीवने आन्दोलनमे छन्हि

तैं अहूँ चलू ईहो चलताह

आगाँ-आगाँ आहाँ रहू

पाछासँ आहाँकेँ ई ठेलताह

तैं तँ कहैत छी

फेरसँ नेते बनताह

चलू आन्दोलनमे

जिन्दाबाद मुर्दाबाद करए

चलू आन्दोलनमे !

देर छैक अन्हेर नहि !

देर छैक अन्हेर नहि
वारपर प्रतिकार करु
कहियाधरि पराइत रहब
आब तँ अधिकार धरु
देर छैक अन्हेर नहि
वारपर प्रतिकार करु।

१

साँझ पड़ल राति भेल
भोरुकवो उगबे करत
सहस्त्र कण्ठ बाजत जखन
हथियार ई धरबे करत
जड़िसँ उखारि फेकि
कतिया एकरा कात करु।
देर छैक अन्हेर नहि
वारपर प्रतिकार करु।।

२

अछि धुआ ई
कखनिधरि डेराइत रहब
खुआओल एकर निशासँ
कमजोर भऽ लड़खड़ाइत रहब
छाल ओढ़ने बाघक
एहि गीदड़सँ पराइत रहब
बज्रसन मुठि अछि

बान्हि कसि प्रहार करु
देर छैक अन्हेर नहि
वारपर प्रतिकार करु।।

हाय, हमर राष्ट्रीयता !

१.

सगबगाइते तोहर अपने अङ्ग
कसाई जकाँ पिता जाइत छह
छोड़ि जड़ि खोजैत मूल
कसिया भूलमे लटा जाइत छह
बात रहैछ किछु नहि
अनेरे मुदा तमसा जाइत छह
नहि जानि किया पता जाइत छह
सभ उड़ैछ अन्तरिक्षमे
तोँ माटिमे लेढ़ा जाइत छह !
हाय, हमर राष्ट्रीयता
तोँ माटिमे लेढ़ा जाइत छह !!

२.

बस खुलिते देशसँ
बेटिकट पड़ा जाइत छह
कोरैछ केओ आखर दू
थरथराकय डेरा जाइत छह
चाहैछ सभ जे मिली गड़
तोँ एकहिसँ लोटा जाइत छह
तैं मिलिकए मोटाअएखन
घोकचिकए पतरा जाइत छह
तोँ अपने घेंट रेटा जाइत छह
सभ उड़ैछ अन्तरिक्षमे

तोँ माटिमे लेढ़ा जाइत छह !
हाय, हमर राष्ट्रीयता
तोँमाटिमे लेढ़ा जाइत छह !!
३.
खोजैत अछि जन तोरा
तोँ बनमे हेरा जाइत छह
फूल- अक्षतसँ आओर तोँ
उग्र बनि घोरा जाइत छह
फूँक पड़िते मुदा ककरो
क्षणेमे फेर झरा जाइत छह
चरा देलक केओ त
बरफ जकाँ सेरा जाइत छह
तोँ माथ सभक गड़ा जाइत छह
सभ उड़ैछ अन्तरिक्षमे
तोँ माटिमे लेढ़ा जाइत छह !
हाय, हमर राष्ट्रीयता
तोँ माटिमे लेढ़ा जाइत छह !!
४.
सात रङ्ग समेटिकए
चमकल ई सूर्य अछि
अनेक होइछ एक तखन
गमकैत अपूर्व अछि
तोँ मुदा एक छाड़ि
देखि दू खरा जाइत छह
फुला अनेरे मुह अपन

कन्दरामे नुका जाइत छह
तोँ कतए भसिया जाइत छह
सभ उड़ैछ अन्तरिक्षमे
तोँ माटिमे लेढ़ा जाइत छह !
हाय, हमर राष्ट्रीयता
तोँ माटिमे लेढ़ा जाइत छह !!

रोड-म्याप

१.

हमरो गामक बतहा
एकटा नक्सा किनने आएल
कहैत रएय अहिमे रोड छैक
जाल जकाँ बिछाएल
आ' लाल रङ्गसँ रङ्गाएल
कहाँदोन ओ रोड-म्याप रहैक
देश ओहीपर चलतैक
देशमे नइ रहतैक रोड
देशे रोडपर घुसकतैक
आब देशे रोडपर घुसकतैक !

२.

विदेशीसभ बड़का-बड़का
रोड बनओलक अछि
कहैत छैक जे रोडोसँ बड़का
ओकर म्यापकेँ चमकओलक अछि
देश, सरकार, लोक आ' पीढ़ीसभ
आब ओहीपर ससरतैक
देश ओहीपर चलतैक
देशमे नइ रहतैक रोड
देशे रोडपर घुसकतैक
आब देशे रोडपर घुसकतैक !

३.

रोडेपर चलत सभ खेल

ओतहि हएत झगड़ा वा मेल

रोडेपरसँ भुकत लोक

माथ ओहो रोडेपर झुकओतैक

रोडेपर लागत आगि

रोडे फेर ओकरो मिझओतैक

देश ओहीपर चलतैक

देशमे नइ रहतैक रोड

देशे रोडपर घुसकतैक

आब देशे रोडपर घुसकतैक !

४.

कहैत रहए बतहा

इहए पत्ता कटओतैक

छिनि हाथमे ओकरा

पूर्ण सत्ता धरओतैक

ओहीसँ आब सभ बनत

आ वएह सभकेँ बनओतैक

देश ओहीपर चलतैक

देशमे नइ रहतैक रोड

देशे रोडपर घुसकतैक

आब देशे रोडपर घुसकतैक !

हँ, हँ लोककेँ गणतन्त्र चाही !

हँ, हँ ई लड़ाई सत्ताके छैक
रोटी, देहरि आ’ लत्ताके छैक
लोक नइ छैक बपौती ककरो
ठीके ई लड़ाई जनसत्ताके छैक
हँ’, हँ ई लड़ाई सत्ताके छैक !

१.

जीभ अपन कटबाकए दुनियाँमे
भीख माँगक काज नइ करत जनता
तख्तापर मौज करतैक कोइ
आ’ घुसकुनियाँ दैत नइ कुहरत जनता
लठैतक लाठी बहुत सहलक ई
अपन ठेङ्गे सही मुदा उठाओत जनता
नगाड़ा पिटि आब जोरसँ डङ्का बजाओत जनता
हँ, हँ रावणक लङ्का सुड्डाह क’ जराओत जनता !!

२.

नइ चाही फुलबएबला षड़यन्त्र
आब लोककेँ अपने यन्त्र चाही
भूखले गिरहीमे सुतत मुदा
धरती अपन पूरा स्वतन्त्र चाही
ककरो रैती नइ बनत आब ई
समता मात्र समताक मन्त्र चाही
आब एकरा अपने तन्त्र चाही
हँ’, हँ लोककेँ गणतन्त्र चाही !!!

काल मड़ड़ाइत छैक !

काल मड़ड़ाइत छैक
आब ओ घेराइत छैक
चारुभर जनताक देखू,
झण्डा फहराइत छैक
काल मड़ड़ाइत छैक !

खूनल अपने खाधिमे
खसि तमसाइत छैक
अपने जालमे फँसल अछि
किछु ने फुरआइत छैक
नष्ट हएत समूल तकर
दिने ने तकाइत छैक
काल मड़ड़ाइत छैक !

इजोतदिसि ससरत !

बन्दूक आइयो गर्जैत अछि
बन्दूक काल्हियो गर्जत
नहि जानि कतेक निरीह आ' निर्दोषपर
भोथहा कुरहरि बजरत
मुदा तैयो होरीमे रङ्ग बरिसते रहतैक
आ' उमङ्ग एकर आओरो पसरत
एखुनका जे अन्हार दिन अछि
अबस्से इजोतदिशि ससरत !



जन्म १९५५ ई. २९ मार्च अर्थात २०११ साल चैत्र १६ गते। विश्वेश्वरप्रसाद कोइरालाक प्रतिबद्ध राजनीतिक अनुयायी। नेपाली राजनीतिपर राष्ट्रीय दैनिकसभमे बरोबरि लिखैत रहैत छथि। प्रस्तुत कविता संग्रहक आलावा विश्वेश्वरप्रसाद कोइरालाद्वारा रचित प्रसिद्ध लघु उपन्यास 'मोदिआइन'क मैथिली रुपान्तरण, 'माल्हो' कथा संग्रह, 'संघीयताक सम्बन्धमे' अनुवाद प्रकाशित छन्हि।